तृतीयः पाठः

अन्योक्ति-मौक्तिकानि

(संकलित)

[प्रस्तुत को कुछ कहने के लिए जब किसी अप्रस्तुत को माध्यम बनाया जाता है अर्थात् किसी से कहने के लिए जब दूसरे पर रखकर बात कही जाती है तो वह अन्योक्ति कहलाती है।

जैसे– *हे बादल! आपके द्वारा छोड़ा गया जल कहीं तो जल ही रहता है और कहीं पर कुछ भी नहीं रहता तथा कहीं वह जल जहर बन जाता है और कहीं मोती बन जाता है। दान करनेवाले महोदय जी, जब तुम किसी धनी पुरुष को दान करते हो तो उसके यहाँ कोई सदुपयोग नहीं है, अपव्ययी पुरुष को दान करने पर नष्ट हो जाता है और दुष्ट लोगों को दान करने पर वह हानि करनेवाला होता है, अतः उसे ही दान दिया जाना चाहिए जिसे आवश्यकता हो।*

यहाँ पर बादल को माध्यम बनाकर उसकी उपयोगिता के विषय में बताया गया है तथा जो भी श्लोक दिये गये हैं वे किसी-न-किसी के माध्यम ही हैं। इसे संस्कृत-साहित्य-शास्त्र में अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार भी कहते हैं। अन्योक्तियों का प्रयोग साहित्यिक दृष्टि से बहुत प्रभावशाली होता है। प्रस्तुत पाठ में प्रभावशाली एवं हृदयग्राही कुछ अन्योक्ति-मणियों को संकलित कर प्रस्तुत किया गया है।]

आपो विमुक्ताः क्वचिदाप एव क्वचिन्न किञ्चिद् गरलं क्वचिच्च।
यस्मिन् विमुक्ताः प्रभवन्ति मुक्ताः पयोद! तस्मिन् विमुखः कुतस्त्वम्।।१।।

जलनिधौ जननं धवलं वपुर्मुर-रिपोरपि पाणि-तले स्थितिः।
इति समस्त-गुणान्वित शंख भोः! कुटिलता हृदयान्न निवारिता।।२।।

अलिरयं नलिनी-दल-मध्यगः कमलिनी-मकरन्द-मदालसः।
विधिवशात् पर-देशमुपागतः कुटजपुष्प-रसं बहु मन्यते।।३।।

उरसि फणिपतिः शिखी ललाटे शिरसि विधुः सुरवाहिनी जटायाम्।
प्रियसखि! कथयामि किं रहस्यं पुरमथनस्य रहोऽपि संसदेव ।।४।।

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।
न सा वक-सहस्रेण परितस्तीर-वासिना।।५।।

अहमस्मि नीलकण्ठस्तव खलु तुष्यामि शब्दमात्रेण।
नाहं जलधर! भवतश्चातक इव जीवनं याचे।।६।।

अग्नि-दाहे न मे दुःखं छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुःखं गुञ्जया सह तोलनम्।।७।।
सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि सन्।
सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः।।८।।
अयि त्यक्तासि कस्तूरि! पामरैः पंक-शंकया।
अलं खेदेन भूपालाः किं न सन्ति महीतले।।९।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) जलनिधौ जननं धवलं वपुर्मुर-रिपोरपि पाणि-तले स्थितिः।
इति समस्त-गुणान्वित शंख भोः! कुटिलता हृदयान्न निवारिता।।

(ख) अलिरयं नलिनी-दल-मध्यगः कमलिनी-मकरन्द-मदालसः।
विधिवशात् पर-देशमुपागतः कुटजपुष्प-रसं बहु मन्यते।।

(ग) अग्नि-दाहे न मे दुःखं छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुःखं गुञ्जया सह तोलनम्।।

(घ) अयि त्यक्तासि कस्तूरि! पामरैः पंक-शंकया।
अलं खेदेन भूपालाः किं न सन्ति महीतले।।

२. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत में अर्थ लिखिए।

(क) एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।
न सा वक-सहस्रेण परितस्तीर-वासिना।।

(ख) अग्नि-दाहे न मे दुःखं छेदे न निकषे न वा।
यत्तदेव महद्दुःखं गुञ्जया सह तोलनम्।।

(ग) सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्मार्गपतितोऽपि सन्।
सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः।।

३. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–

(क) एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत्।

(ख) नाहं जलधर! भवतश्चातक इव जीवनं याचे।

(ग) सतां वै पादलग्नोऽपि व्यथयत्येव कण्टकः।

४. शंख के सम्बन्ध में किस श्लोक में क्या कहा गया है?

५. शिवजी के बारे में पार्वती की उक्ति का निहितार्थ क्या है? स्पष्ट कीजिए।

६. इस पाठ की जो अन्योक्ति आपको सबसे अच्छी लगती हो, उसकी व्याख्या कीजिए।

७. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
धवलम्, अलिः, परितः, जलधरः, कमलम्।

८. सन्धि-विच्छेद कीजिए–
हृदयान्न, नाहम्, रहोऽपि, व्यथयत्येव।

९. निम्न शब्दों में उपसर्ग अलग कीजिए–
प्रभवन्ति, निवारिता, उपागतः, विमुखः, सुमुखोऽपि।

१०. निम्न शब्दों में विभक्ति एवं वचन बताइये–
पाणितले, पामरैः, जटायाम्, विमुक्ताः।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

बादलों की उपयोगिता के बारे में अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

●●●